

आधुनिक संस्कृत गद्य के संदर्भ में अध्ययन: वैचारिक विश्लेषण

साधना संगम, शोधकर्ता (संस्कृत विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

आधुनिक संस्कृत गद्य संस्कृत साहित्य की निरंतर विकसित होती परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। पारंपरिक संस्कृत गद्य में जहां धार्मिक, दार्शनिक, आख्यानत्मक और शास्त्रीय विषयों की प्रधानता रही, वहीं आधुनिक काल में सामाजिक परिवर्तन, राष्ट्रीय चेतना, शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, मानवीय मूल्य और समकालीन जीवन की समस्याओं को भी गद्य साहित्य में अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक संस्कृत गद्य के स्वरूप, विषय-वस्तु, भाषा-शैली तथा वैचारिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना है। आधुनिक संस्कृत गद्यकारों ने परंपरागत साहित्यिक मूल्यों को बनाए रखते हुए नवीन विचारों और समकालीन सामाजिक संदर्भों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है। इस प्रक्रिया में संस्कृत भाषा केवल प्राचीन ज्ञान और परंपरा की अभिव्यक्ति का माध्यम न रहकर आधुनिक चिंतन, सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक पुनर्व्याख्या का माध्यम भी बनी है। आधुनिक संस्कृत गद्य में राष्ट्रवाद, सामाजिक समानता, नारी चेतना, पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक मूल्य और मानवीय संवेदनाओं जैसे विषयों की उपस्थिति इसके वैचारिक विस्तार को दर्शाती है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि आधुनिक संस्कृत गद्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद एक प्रमुख विशेषता है। अतः आधुनिक संस्कृत गद्य का वैचारिक अध्ययन संस्कृत साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता को समझने के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक सामाजिक विचारों के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करने में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द: आधुनिक संस्कृत गद्य, वैचारिक विश्लेषण, संस्कृत साहित्य, परंपरा और आधुनिकता, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना, नारी चेतना, मानवीय मूल्य, समकालीन साहित्य, सांस्कृतिक चेतना।

